Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 1 - 2019

मानव के भाग्य एवं कर्म का अध्ययन

डॉ परमेश्वर पाण्डेय*

मानव जीवन सृष्टि की अलौकिक देन है। कर्म एवं भाग्य का मानव जीवन के उपर जो प्रभाव पड़ता है उसे भिन्न–भिन्न विचारकों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से विचार किया है। उनके विचारों का निष्कर्ष यह है कि कुछ विचारक मानते है कि कर्म से ही भाग्य का निर्माण होता है तथा कुछ का कहना है कि भाग्य से ही सब कुछ मिलता है। मैने हजारों लोगों के जीवन का अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुॅचा हूॅ कि ईश्वर ने बच्चा पैदा होने से ही लेकर श्मशान जाने तक सब कुछ पहले से ही निर्धारित कर दिया है। समय के साथ उसके जीवन में कर्मरूपी अध्याय जुड़ता जाता है कर्म भी न तो एक अधिक कर सकता है न ही एक कम। जिस वस्तु या स्थान की प्राप्ति होनी है उसके अनुसार कर्म स्वयं बन जाते है। व्यक्ति का भाग्य उसके पूर्व जन्म के कर्मो से जुड़ा होता है।

कर्म की गति निराली है। ईश्वर स्वयं कर्ता है। व्यक्ति ईश्वर के हाथ की कठपुतली है। देता सब कुछ ईश्वर है लेकिन वह स्वयं दाता न बनकर देने के लिए कर्म को माध्यम बना देता है जिससे अकर्मण्यता को बढावा न मिले। महाभारत में श्रीकृष्ण को सब कुछ ज्ञात था युद्व के बाद क्या निष्कर्ष निकलना है तय था लेकिन सभी महारथियों को युद्व रूपी कर्म में लगा कर अपना–अपना मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया। गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते है कि तुम्हारे विरूद्व जो महारथी खड़े है तुम्हारे युद्व न करने पर भी मरेगें यदि युद्व करते हो तो तुम्हें यश मिलेगा तथा लोक और परलोक दोनों बनेगा। धर्म की विजय तय है अधर्म को हारना ही पड़ेगा। गीता में भी श्रीकृष्ण ने कहा है:

कर्मणेवाधिकाररस्ते मा फलेषु कदाचन्।

अर्थात तुम्हारा कर्म करने का अधिकार है। फल तो मुझे देना है। कहने का तात्पर्य है फल की चिन्ता नही करनी चाहिए वह तो निश्चित है जो पहले से ही तय है तथा ईश्वर के वश में है। ईश्वर के चिन्तन से व्यक्ति का मन निर्मल हो जाता है तथा जैसे पिता बच्चे के हित की चिन्ता करता है उसी प्रकार पिता रूपी ईश्वर प्राणी का हित चिन्तन करता है।

धरती पर पैदा होने वाला प्राणी पॉच तत्वों से बना होता है। क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच तत्व यह रचित शरीरा।

पॉच तत्व से बना हुआ शरीर इन्हीं पाचों तत्वों में मिल जाता है। राम कृष्ण जैसे अवतारी ईश्वर भी इसी में विलीन हो गये। अतः प्रकृति के कण–कण में ईश्वर विद्यमान है। ईश्वर एक है लेकिन उसके रूप अनेक है। धरती पर पैदा होने वाले जीवों में हम मानव को ही सर्वश्रेष्ठ मानते है क्योकि श्रेष्ठ और सर्वश्रेष्ठ का निर्णय मानव के हाथ में है। यद्यपि कि प्रकृति के संकेत का ज्ञान मानव से अधिक अन्य जीवों में है। मानव को प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने बुद्वि का इस्तेमाल करते हुए आविष्कार के माध्यम से आधी अधूरी जानकारी प्राप्त करते है। जबकि जीव जन्तुओं को प्राकृतिक आपदा का संकेत बिना किसी यन्त्र के प्राप्त हो जाता है।

*प्राचार्य, जी.डी.एस.बी.पी.जी. कालेज डेरापुर, कानपुर देहात।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

जीव जन्तुओं की बोली पर अनुसन्धान कर तथा उसे पूर्ण रूप से समझ कर प्राकृतिक आपदा तथा मौसम की भविष्यणी का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

धर्म मानव जीवन को व्यवस्थित अनुशासित तथा कर्तव्य परायण बनाते है। सभी धर्मो का लक्ष्य एक है। वह है मानव कल्याण तथा मानव–मानव के बीच आपसी प्रेम तथा सहिष्णुता। धर्म मानव जीवन को सही दिशा प्रदान करता है। इसके मार्ग अलग–अलग हो सकते है लेकिन लक्ष्य एक है। सम्पूर्ण विश्व में धर्मो का विभाजन किया गया है। विश्व धर्म का वर्गीकरण निम्नवत है।

1. भारतीय धर्म एवं दर्शन
2. सामी धर्म
3. सुदूर पूर्व धर्म

भारतीय धर्म में वे धर्म आते है जिनका अभ्युदय भारत में हुआ तथा जिनका विकास भारत एवं भारत से बाहर भी हुआ।

1. हिन्दू धर्म
2. बौद्व धर्म
3. जैन धर्म

हिन्दू धर्म का अभ्युदय भारत में हुआ तथा इसका विकास भारत में ज्यादा हुआ यद्यपि कि भारत से बाहर भी इसका फैलाव हुआ लेकिन यह कम मात्रा में हुआ।

बौद्व धर्म जिनका अभ्युदय भारत में हुआ लेकिन इनका विकास भारत से बाहर जापान थाइलैण्ड चीन तिब्बत भूटान म्यामार एवं वर्मा आदि देशों में हुआ।

जैन धर्म जिसका जन्म भारत में हुआ लेकिन जिसका विकास भारत तथा भारत के बाहर भी हुआ।

सामी धर्म जिसमें मुख्य रूप से निम्न धर्म आते है

1. इस्लाम
2. यहूदी
3. इसाई

इस्लाम धर्म जिसका प्रादुर्भाव अरब देशों में हुआ तथा इसका अरब देशों एवं विश्व के अधिकांश देशों में इसका विकास एवं फैलाव हुआ। यहूदी धर्म जिसका प्रादुर्भाव यूरोप में हुआ। यहूदी धर्म के लोग ओल्ड टेस्टामेन्ट को अपना धर्म ग्रन्थ मानते है। यह धर्म यूरोप के साथ–साथ विश्व के अधिकांश देशों में विकसित हुआ है। इसाई धर्म यहूदी धर्म से प्रकट हुआ। यहूदी धर्म का धार्मिक ग्रन्थ ओल्ड टेस्टामेन्ट तथा इसाई धर्म के लोग न्यू टेस्टामेन्ट को अपना धार्मिक ग्रन्थ मानते है जो ओल्ड टेस्टामेन्ट का विकसित रूप है।

सूदूर पूर्व धर्म में कन्फ्यूसियस सिन्टो ताओ मुख्य धर्म है जिनका अभ्युदय चीन जापान आदि देशों में हुआ लेकिन यहॉ बौद्व धर्म का प्रभाव ज्यादा है।

उपर्युक्त धर्म की जीवन शैली अलग–अलग है। ये अपने आराध्य को भिन्न–भिन्न तरीको से आराधना करते हैं तथा अपने सुखी एवं सफल जीवन की कामना करते है। कभी–कभी भिन्न–भिन्न धर्मो से महत्वपूर्ण मानने के लिए लड़ाई झगड़े भी करते हैं। यद्यपि धर्म जीवन जीने की कला सिखाता है तथा उसे अपने जीवन मे उतारने की प्रेरणा देता है। सभी धर्मो के संस्थापक एवं आराध्य अपने धर्म को मानने के लिए प्रेरणा प्रदान करते है तथा एक आदर्श प्रस्तुत करते है।

प्रश्न उठता है कि धर्म मानव के लिए बना है या मानव धर्म के लिए बना है। इसका उत्तर दिया जा सकता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक है धर्म मानव के लिए एवं मानव धर्म के लिए बना है। कभी–कभी कुछ आलोचक जिन्हें धर्म का ठीक–ठीक ज्ञान नही होता धर्म की आलाचना करते है तथा धर्म के बारे में बुरे–बुरे वक्तव्य देते है। कही न कही ऐसे लोग कुण्ठित मानसिकता के होते है जो कुछ न जानते हुए अपनी बात को सही ठहराते है

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

तथा धर्म का अनुसरण करने वाले लोगों को भ्रमित करते है।

सभी धर्मो का सार मानव धर्म है। मानव जो परमात्मा का अंश है समुद्र के जल को हम किसी पात्र मे लेते है तो वह समुद्र से अलग दिखाई देता है ज्यो ही हम उसे समुद्र में मिलाते है तो हम उसे पहचान नही पाते कि कौन सा जल मेरे पात्र का है। उसी प्रकार परमात्मा एवं जीव मे अंश एवं अंशी का सम्बन्ध है। जीव से अविद्या रूपी माया के हटते ही जीव अलौकिक आनन्द मे डूब जाता है।

जो धर्म मानव को आदर्श बनाता है तथा जीवन को आनन्दित बनाता है वही वास्तविक धर्म है अन्यथा मानव को दानव बनाने वाले धर्म को धर्म नही बल्कि अधर्म माना जाना चाहिए। धर्म वह जिसे जीवन में धारण किया जा सके जो जीवन को आदर्श बना दे तथा जिसका अनुकरण पूरा समाज करने लगे।

प्रश्न उठ सकता है कि मानव के जीवन में यदि सब कुछ पहले से तय है। इस प्रवृति का विकास हो जाय तो मानव कर्म ही न करें। गीता मे कृष्ण ने कहा था कि मेरे करने के लिए कोई भी कर्म नही है फिर भी मैं कर्म करता हूँ कि लोग आने वाले समयों में इसका अनुकरण कर सके। राम ने आदर्श इसलिए स्थापित किया कि राजा या शासक उनके चरित्र का अनुसरण कर सके जिससे राज्य मे आदर्श व्यवस्था स्थापित की जा सके। राम राज्य की स्थापना की बात करते है लेकिन उसके लिए राजा और जनता दोनों को राम के चरित्र का अनुसरण करना होगा।

किसी भी व्यक्ति की यह औकात नही है कि वह कर्म न करे। यदि उसके भाग्य में कोई पद कोई वस्तु अथवा महान बनना लिखा है तो कर्म उसी के अनुरूप होने लगेगें अन्यथा रिक्शे वाले के बच्चे को आई एस बनना है तो अभाव के बाद भी रिक्शा वाला उसे पढाने लगता तथा अतिरिक्त मेहनत करने लगता है तथा उसका बच्चा भी परिश्रम से पढने लगता है। अतः इसका अनुसरण करते हुए व्यक्ति को ईमानदारी से कार्य करना चाहिए जो मिलना है वह पहले से तय है तो फिर हम बेइमानी क्यो करें किसी का हिस्सा क्यों हड़पे भ्रष्टाचार क्यों करे जिससे अगला जन्म बिगड़े तथा अगले जन्म का भाग्य बिगाड़ ले।

पूर्व जन्म के कर्मो के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण हो रहा है तो बेइमानी जालसाजी भ्रष्टाचार से इतर इमानदारी कर्त्तव्य निष्ठ अपने जीवन में लानी होगी जिससे पूर्व जन्म के कर्मो का लाभ लेते हुए आगामी जन्म के जीवन को सफल बना सकें।

उपर्युक्त सोच विकसित होने से सद्कर्म में हमारी प्रवृति बढेगी तथा राज्य एवं समाज का विकास होगा एवं व्यक्ति के जीवन में भी नैतिकता का विकास होगा। इस सोच के विकसित होने से धर्म जाति पाति का भेद भाव भी समाप्त होगा क्योकि यदि इस जन्म मे हम किसी धर्म या जाति में पैदा हुए है तो अगले जन्म में किसी दूसरे जातिया धर्म में पैदा हो सकते है अतः सभी में आपसी भाइचारा एवं समानता की भावना होनी चाहिए।

धन्यवाद

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501